वर्तमान परिप्रेक्ष्य में संस्कृत वाङ्मय की प्रासंगिकता

आदरणीया प्राचार्या को सप्रेम भेंट

सम्पादक
डॉ. प्रभात कुमार सिंह
अध्यक्ष-संस्कृत विभाग

सह-सम्पादक
डॉ. मनोज कुमार प्रजापति
अध्यक्ष-भौतिकी विभाग

डॉ. शेफालिका राय
अध्यक्ष-अर्थशास्त्र विभाग

स्वतंत्रता संग्राम सेनानी विश्राम सिंह
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
चुनार, मीरजापुर (उ. प्र.)

संस्कृति प्रकाशन, वाराणसी

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में संस्कृत वाङ्मय की प्रासंगिकता

ISBN 978-93-85717-76-5

© सम्पादक

प्रथम संस्करण : 2019

मूल्य : ₹ 600.00

प्रकाशक

संस्कृति प्रकाशन

बी० 32/32 ए-14, साकेत नगर
वाराणसी-221 005
मोबाइल : 9473952095, 9415256054
ई-मेल : sanskritiprakashan1@gmail.com
www.sanskritiprakashan.com

आध्यात्मिक प्रकोष्ठ

आवरण एवं अन्तः पृष्ठ सज्जा : **अभिषेक चतुर्वेदी**

आवरण चित्र
संस्कृति प्रकाशन की फोटो-लाइब्रेरी से

मुद्रक
अभिनव प्रिण्टर्स
साकेत नगर, वाराणसी (उ०प्र०)

संस्कृत साहित्य में ऐतिहासिक काव्यों की प्रासंगि

डॉ० अनीता कु
एसो० प्रो०, स
राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्य
गा

भारत का प्राचीन इतिहास अत्यन्त गौरवपूर्ण रहा है, प दुर्भाग्यवश हमें अपने प्राचीन इतिहास के निर्माण के लिए उपयोगी सा बहुत कम मिलती है। हमारे यहाँ हेरोडोट्स, थ्यूसी, डाइडीज अथवा लि जैसे इतिहास लेखक नहीं उत्पन्न हुए जैसे कि यूनान, चीन, रोम में हु इस कमी का कारण सम्भवतः यही है कि प्राचीन भारतीय मनीषियों इतिहास को उस दृष्टिकोण से देखा ही नहीं, जैसा कि आज के विद्वान दे है। उनका दृष्टिकोण पूर्णतया धार्मिक व दार्शनिक था। उनकी दृष्टि में इतिह साम्राज्यों के उत्थान-पतन की गाथा न होकर उन समस्त मूल्यों का संकल मात्र था, जिनके ऊपर जीवन मूल्य आधारित है। अतः पाश्चात्य विद्वानों अ मत है कि भारतीय साहित्य में ऐतिहासिक ग्रन्थों व इतिहासकारों की संख नगण्य है, किन्तु इतिहासकार के. सी. श्रीवास्तव ने लिखा है कि तथापि इसक अर्थ यह नहीं कि प्राचीन भारतीयों में ऐतिहासिक चेतना का अभाव था प्राचीन ग्रन्थों के अध्ययन से यह बात स्पष्ट है कि प्राचीन काल से ही भारतीयों में इतिहास बुद्धि विद्यमान रही है। वैदिक साहित्य, बौद्ध तथा जैन ग्रन्थों में सुरक्षित आचार्यों की सूची से यह बात स्पष्ट हो जाती है। भारत का इतिहास संस्कृत साहित्य, स्तम्भ लेख, शिलालेख, विदेशी यात्रियों के विवरण के आधार पर अपनी ऐतिहासिकता सिद्ध कर सकता है। सातवीं शती के चीनी यात्री हुएनसांग ने लिखा है कि भारत के प्रत्येक प्रान्त में घटनाओं का विवरण लिखने के लिए कर्मचारी नियुक्त थें।[२]

कवि कल्हण रचित राजतरंगिणी महाकाव्य से पता चलता है कि प्राचीन भारतीय विलुप्त तथा विस्मृत इतिहास को पुनर्जीवित करने की कुछ आधुनिक विधियों से परिचित थें।[३] वह लिखते है कि वही गुणवान कवि प्रशंसा का अधिकारी है जो राग-द्वेश से मुक्त होकर एकमात्र तथ्यों के निरूपण में ही अपनी भाषा का प्रयोग करता है।[४]

भारतीय इतिहास के जानने के तीन साधन हैं- साहित्यिक साक्ष्य, विदेशी यात्रियों के विवरण तथा पुरातत्व सम्बन्धी साक्ष्य।

साहित्यिक साक्ष्य-

इसके अन्तर्गत वेद, पुराण, उपनिषद, स्मृति ग्रन्थों, लौकिक संस्कृत साहित्य में रामायण, महाभारत, बौद्ध एवं जैन साहित्य, कौटिल्य का

अर्थशास्त्र, महाकवि बाणभट्टकृत हर्षचरितम्, कवि पद्मगुप्त परिमलकृत नवसाहसांकचरितम्, कवि बिल्हणकृत विक्रमांकदेवचरितम्, कवि कल्हणकृत राजतरंगिणी, कवि सोमेश्वरकृत कीर्ति कौमुदी आदि।

विदेशी यात्रियों के विवरण–

समय-समय पर आने वाले विदेशी यात्रियों के विवरण भारतीय इतिहास को जानने में सहायक सिद्ध हुए हैं। मेगास्थनीज की इण्डिका, ह्वेनसांग फाह्यान, इत्सिंग के विवरण एवं तिब्बती लामा तारानाथ के ग्रन्थ, अरबी इतिहासकार अलबरूनी के लेख महत्वपूर्ण है।

पुरातत्व सम्बन्धी साक्ष्य–

इसके अन्तर्गत स्मारक, स्तम्भलेख, शिलालेख, मुद्राओं से भारतीय इतिहास पर प्रकाश पड़ता है।

उपरोक्त प्रमाण भारतीयों में ऐतिहासिकता का बोध कराता है। भारतीय इतिहास और पाश्चात्य इतिहास में मूलभूत अन्तर है कि भारतीय इतिहास प्राचीन समय में घटित घटनाओं और धारणाओं को व्यवस्थित ढंग से बुनकर कहानी के रूप में प्रस्तुत करता है और पाश्चात्य इतिहास व्यक्ति, समाज, देश की महत्वपूर्ण एवं सार्वजनिक घटनाओं का कालक्रमानुसार विवरण इतिहास कहलाता है और इन घटनाओं पर आधारित ग्रन्थ ऐतिहासिक ग्रन्थ कहलाते है।

भारतीय लेखन शैली के अनुसार इतिहास पौराणिक वर्ग में अनेक ग्रन्थ आते है, जो केवल धर्मपरक एवं अनुश्रुतिपरक ही नहीं, अपितु आधुनिक शैली में ऐतिहासिक काव्य कहलाते है। इसमें वर्णित चरित नायकों के स्थितिकाल का प्रश्न नगण्य है। जीवन के चिरन्तन आदर्शों के प्रतीक होने के कारण उनकी अवस्थिति सर्वकालिक है। कवि कल्हण कृत राजतरंगिणी, जिसे सभी विद्वान एक स्वर से विशुद्ध ऐतिहासिक ग्रन्थ के रूप में स्वीकार करते है। इस ग्रन्थ में कवि का उद्‌देश्य राजाओं का नीरस वृतान्त प्रस्तुत करना ही नहीं, अपितु सहस्रों वर्षों का राजनैतिक, सांस्कृतिक इतिहास का विवरण बड़ी कुशलता से चित्रित करना है। कवि का उद्‌देश्य सर्वत्र अपने को विशुद्ध इतिहासकार सिद्ध करना परिलक्षित होता है। लेकिन इनमें वर्णित अनेक ऐतिहासिक ग्रन्थ विदेशी आक्रमणकारियों के द्वारा नृट हो गये। जैसे-कवि जयानक रचित पृथ्वीराजविजयम् महाकाव्य आदि।

ऐतिहासिक काव्यों की श्रृंखला में प्रधानतया रामायण, महाभारत आदि ग्रन्थों से तत्कालीन समाज का धार्मिक, राजनैतिक, पारिवारिक, सांस्कृतिक स्थिति का पता चलता है। कवि अश्वघोष रचित बुद्धचरितम् में भगवान बुद्ध के जन्म से लेकर बुद्धत्व प्राप्ति तक की घटनाओं का वर्णन है। लौकिक संस्कृत साहित्य में महाकवि बाणभट्ट रचित हर्षचरितम् प्रथम

ऐतिहासिक ग्रन्थ है, जिसमें कन्नौज के राजा हर्षवर्द्धन की राज्य की जानकारी मिलती है। काव्य में महाकवि पद्मगुप्त परिमल रचित नवसाहसांकचरितम् प्रथम ऐतिहासिक महाकाव्य है, जिसका समय १००५ ईसवी के आस-पास माना जाता है। इसमें परमारवंशी राजाओं का कालक्रमानुसार विवरण मिलता है। कवि बिल्हण कृत विक्रमांकदेवचरितम् में चालुक्यवंशीय राजाओं का वर्णन मिलता है। जैन आचार्य हेमचन्द्र कृत 'कुमारपालचरितम्' में १२वीं शती के गुजरात के चालुक्यवंशी राजाओं का इतिहास वर्णित है। इसी प्रकार सुकृतसंकीर्तनम्, वसन्त विलासम्, हमीर महाकाव्य, मधुराविजयम् आदि अनेक काव्य हैं, जिसकी ऐतिहासिकता विभिन्न साक्ष्यों से प्रमाणित है।

जिस प्रकार एक भवन के लिए नींव का मजबूत होना जरूरी है, उसी प्रकार मानव जीवन के लिए अतीत (इतिहास) का ज्ञान होना जरूरी है। यह भविष्य को संवारने के लिए ऐतिहासिक ग्रन्थों का अनुशीलन आवश्यक है। ये विविध रूपों में व्यक्ति की सहायता कर उसका पथ-प्रदर्शन करता है।

प्रासंगिकता-

ऐतिहासिक ग्रन्थों के माध्यम से ही हमें अपनी सभ्यता एवं संस्कृति का ज्ञान होता है। वेद, पुराण, उपनिषद, रामायण, महाभारत, हर्षचरितम्, राजतरंगिणी, बुद्धचरितम्, कौटिल्य का अर्थशास्त्र आदि अनेक ऐसे ऐतिहासिक ग्रन्थ हैं जिनके अध्ययन करने पर हमें तत्कालीन सामाजिक सम्बन्ध, राजनीतिक सम्बन्ध, व्यापारिक एवं पारिवारिक सम्बन्धों की जानकारी मिलती है। इनमें वेद, पुराण, रामायण, उपनिषद् आदि ऐतिहासिक ग्रन्थ से ज्यादा धार्मिक ग्रन्थ है जिसमें वर्णित विषयवस्तु उस समय भी प्रासंगिक थी और आज भी प्रासंगिक है। ऐसे कालजयी ग्रन्थों को हम देवतुल्य पूजते हैं। उनके वर्णित ज्ञान से हम शिक्षा ग्रहण करते है। इन्हीं ग्रन्थों से शैव, वैष्णव, जैन, बौद्ध आदि धर्मों, के विषय में ज्ञान प्राप्त होता है। इसी ज्ञान व दर्शन के कारण भारत विश्वगुरू बना और रहेगा। कालान्तर में विदेशी आक्रमणों और सत्ता ने भारतीय संस्कृति पर कुठाराघात किया, परिणामस्वरूप धीरे-धीरे हम पाश्चात्य संस्कृति की ओर उन्मुख होने लगे और अपनी भारतीय संस्कृति को विस्मृत करने लगें। हमारे इसी भारतीय संस्कृति एवं ग्रन्थों को जब पाश्चात्य विद्वानों ने अनुशीलन किया व उनकी प्रशंसा की तो हम पुनः इन ग्रन्थों की ओर प्रेरित हुए। जैसे- महर्षि पतंजलि विरचित योगदर्शन जिसे हम विस्मृत करने लगे थे पाश्चात्य विद्वानों के विश्लेषण करने पर तथा कुछ भारतीय मनीषियों की पहल पर संयुक्त राष्ट्र संघ में २१ जून २०१५ को अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस घोषित किया और भारत में इसके प्रचार-प्रसार के लिए बाबा रामदेव, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी आचार्य बालकृष्ण जैसे मनीषियों ने योग-विज्ञान

ो बढ़ाया और और इसे शिक्षा से जोड़ने का प्रयास किया जिससे स्वस्थ रहे और योग के माध्यम से अपनी सुप्त पड़ी शक्तियों को कर अपना शारीरिक व मानसिक विकास करे।

वर्तमान में प्रत्येक व्यक्ति जीवन के प्रति असन्तुष्ट है और विभिन्न स्थितियों में अपने आपको समायोजित करने में असक्षम महसूस कर रहा इस परिस्थिति में आक्रोश का विस्फोट होना स्वाभाविक है। ऐसी स्थिति हम योग विज्ञान में निर्दिष्ट यम, नियम, आसन, प्राणायाम आदि अष्टांग ग के माध्यम सें शारीरिक व मानसिक शक्तियों का विकास कर सकते है जससे शरीर स्वस्थ रहेगा और चित्त शान्त रहेगा। ये बिना किसी बाह्य साधन के मनुष्य को तन और मन दोनों को स्वस्थ कर देता है। इसलिए प्राचीन ऋषियों ने मन परमात्मा से मन शान्ति की प्रार्थना की-

तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।[४]

आज विश्व में अनेक वैश्विक समस्याएं जैसे- पर्यावरण प्रदूषण, आतंकवाद, भ्रष्टाचार आदि चतुर्दिक फैला हुआ है। जिनका समाधान हम अपने ऐतिहासिक ग्रन्थों के अध्ययन से निकाल सकते हैं। पर्यावरण प्रदूषण हम सभी की तृष्णा, अज्ञानता आदि से बढ़ रहा है, जिससे भूकम्प, सुनामी, ज्वालामुखी विस्फोट, आणुविक विस्फोट से रेडियोधर्मी तरंगों का उत्सर्जन, अम्लीय वर्षा, असमय वर्षा, प्रदूषित वायु इत्यादि विभिन्न समस्याओं को जन्म देता है। इस सभी का दुष्प्रभाव प्राणियों पर पड़ता है। ऐतिहासिक ग्रन्थ वेद में पंच वायु (प्राण) की शुद्धि के लिए यज्ञ और वृक्षारोपण[५] का उपाय बताया गया है। टौटीव नामक वैज्ञानिक ने हवन पर की गयी अपने शोध में यह पाया कि आधे घंटे हवन में बैठा जाए अथवा हवन के धुँए से शरीर का सम्पर्क हो तो टाइफाइड जैसे खतरनाक रोग फैलाने वाले जीवाणु मर जाते हैं और शरीर शुद्ध हो जाता है। यज्ञ की महत्ता देखते हुए राष्ट्रीय अनुसंधान संस्थान लखनऊ के वैज्ञानिकों ने इस पर शोध किया और कहा कि १ किलो आम की लकड़ी पर १/२ किलो हवन सामग्री डालकर जलाई जाए तो एक घंटे के भीतर ही कक्ष में मौजूद बैक्टीरिया का स्तर ६४ प्रतिशत कम हो जाता है और कक्ष की हवा में मौजूद जीवाणुओं का परीक्षण किया। यह पाया कि कक्ष के दरवाजे खोले जाने और सारा धुँआ बाहर निकल जाने के २४ घंटे के बाद भी जीवाणुओं का स्तर ६६ प्रतिशत कम था। बार-बार परीक्षण करने पर निष्कर्ष निकला कि एक बार के धुँए का असर एक माह तक रहा और विषाणु स्तर ३० तीन बाद भी सामान्य से बहुत कम था।[६] इस यज्ञ का सकारात्मक प्रभाव फसलों और वनस्पतियों पर भी देखा गया। इसलिए ऋग्वेद में यज्ञ को विश्व की नाभि कहा गया है-

अयं यज्ञो भुवनस्य नाभिः।[७]

इसीलिए भारतीय संस्कृति में सभी आश्रमों में प्रतिदिन यज्ञ करना आवश्यक बताया गया। वृक्ष वायु में ऑक्सीजन की मात्रा बढ़ाकर कार्बनडाई-आक्साइड को कम करते हैं। आधुनिक विज्ञान ने प्राणियों के जीवन के लिए ऑक्सीजन की महत्ता को प्रतिपादित किया है। यही बात शुक्ल युजर्वेद में कही गयी है-

वनस्पति शमिता।

ऐतिहासिक ग्रन्थों के अनुशीलन से जहाँ एक ओर हमें आप सभ्यता एवं संस्कृति को जानने का अवसर मिलता है, वहीं वैश्विक समस्याओं के समाधान में मुख्य भूमिका निभाती है। आज हमारा समाज भ्रष्टाचार, बलात्कार आदि घटनाओं से अपनी छवि बिगाड़ रहा है। इसका समाधान मनुस्मृति में इस प्रकार कहा गया है-

मातृवत् परदारेषु परद्रव्येषु लोष्ठवत्।
आत्मवत् सर्वभूतेषु यः पश्यति सः पण्डितः।।[९]

अर्थात् परस्त्री को माता के समान और दूसरे के धन को मिट्टी के समान समझो।

आज दिन प्रतिदिन व्यक्ति का नैतिक व चारित्रिक पतन हो रहा है, जिससे वह अनेक बिमारियों से ग्रसित हो रहा है। अतः यह ग्रन्थ हमें परस्त्री से दूर रहने की शिक्षा दी गयी है-

वरं क्लेव्यं पुंसां न च परकलत्रभिगमनम्।[१०]

इसके अनुपालन में एड्स जैसी बिमारियों से बच सकते हैं।

आज समाज में परिवार में आपसी कलह वैमनस्य दिखाई दे रहा है, जिससे प्रतिदिन जघन्य अपराध हो रहे है। यदि ऐतिहासिक ग्रन्थ रामायण आदि का अध्ययन करें तो पारिवारिक व सामाजिक सम्बन्धों में सुधार हो सकता है। वैश्विक शान्ति व विश्व बन्धुत्व की भावना का विभास कर सकते हैं-

मित्रास्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे।
मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे।।[११]

अर्थात् मैं सभी प्राणियों को मित्रता की दृष्टि से देखूँ। अन्ततः ऐतिहासिक ग्रन्थों के अनुशीलन से हमे अतीत में हुई दुर्घटनाओं से सीख मिलती है, जिससे भविष्य ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति न हो।

ऐतिहासिक ग्रन्थों में वर्णित विभिन्न कथाओं को बालकों को बचपन से सुनाई जाए तो उनका नैतिक व चारित्रिक विकास सुदश्ढ़ तरीके से होता है, जिससे वे समाज के सशक्त नागरिक बन सके।

निष्कर्ष यही है कि इन ऐतिहासिक ग्रन्थ, वेद-पुराण, रामायण महाभारत आदि में निहित जीवन मूल्यों को समझकर अपने जीवन में

अंगीकार करें तो भारतीय संस्कृति में पुरूषार्थ यानी को मोक्ष को प्राप्त कर सकता है। यही ऐतिहासिक ग्रन्थों की प्रासंगिकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

१. के. सी. श्रीवास्तव : प्राचीन भारत का इतिहास, पृष्ठ सं० ४ २. के. सी. श्रीवास्तव : प्राचीन भारत का इतिहास, पृष्ठ सं० ४
३. के. सी. श्रीवास्तव : प्राचीन भारत का इतिहास
४. श्लाध्यः स एव गुणवान रागद्वेष बहिष्कृता।
भूताऽर्थ कथने यस्य स्थेयस्येव सरस्वती।।
– कवि कल्हण कृत राजतरंगिणी १/६

५. शुक्ल यजुर्वेद ३४/१
६. शुक्ल यजुर्वेद २२/२३
७. यह रिपोर्ट Research Journal of Ethinopharmacology Dec.2007 में प्रकाशित है।
८. ऋग्वेद १/१६४/३५
९. मनुस्मृति २/१२१
१०. हितोपदेश
११. यजुर्वेद ३६/१८